श्रमण २००६ ०१ (फोल्डर नं. ०२५०५७)

सम्पादक - डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
प्राकृत कथा – साहित्य में सांस्कृतिक चेतना – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ---------- १-१०
कर्पूरमञ्जरी में भारतीय समाज – डॉ. हरिशंकर पाण्डेय----------११-१८
तत्त्वार्थसूत्र का पूरक ग्रन्थ – जैन सिद्धान्त – दीपिका – डॉ. धर्मचन्द जैन ---------- १९-३२
भारतीय व्याकरण शास्त्र की परम्परा – डॉ. अतुल कुमार प्रसाद सिंह ---------- ३३-४४
पज्ञ पुराण में राम का कथानक और उसका सांस्कृतिक पक्ष – डॉ. श्वेताजैन ---------- ४५-५३
धम्म चक्र प्रवर्तन सूत्र – मानवीय दु:ख विमुक्ति का निदान पत्र – प्रो. अँगने लाल ---------- ५४-५९
प्रतीत्यसमुत्पाद और निमित्तोपादानवाद – कु. अल्पना जैन---------- ६०-६५
महावीर कालीन मत – मतान्तर – पुनर्निरीक्षण – डॉ. विभा उपाध्याय ---------- ६६-८४
जैन धर्म के जीवन मूल्यों की प्रासङ्गिकता – दुलीचन्द जैन ---------- ८५-९६
वैदिक ऋषिओं का जैन परम्परा में आत्मसातीकरण – डॉ. अरुण प्रताप सिंह ---------- ९७-१०५
'दया – मृत्यु' एवं 'संथारा – प्रथा' का वैज्ञानिक आधार – डॉ. राम कुमार गुप्त ---------- १०६-१११
जैन श्रमण संघ में विधि शास्त्र का विकास – डॉ. शारदा सिंह ---------- ११२-१२०
देवानन्दा – अभिनन्दन – कुमार प्रियदर्शी ---------- १२१-१२३
The Conception of Death in Buddhism and Jainism – Dr. Pramod Kumar Singh ------ 126-138
Jaina Sasanadevatas – Dr. Nandini Verma
Source and Iconography – Dr. Ratnesh Verma---------- 139
विधापीठ के प्राङ्गण में ---------- १४२
जैन जगत ---------- १४८-१५६
साहित्य सत्कार ---------- १५७-१६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org